INDIAN FASHION - CONCEPT TO CONSUMER : SERIES 3

The story from the concept to the consumer is imbued with inspiration, ideation, labour and glamour. The metamorphosis from an idea to a pleasing product begins, more often than not, with inspiration. Paradoxically, fashion inspiration is an ongoing process in which the mind is trained to gather ideas. The sources of inspiration abound in nature, flora and fauna, the wild, culture, social values, customs and mores that vary from place to place.

Every designer follows a process for design development. When starting a collection, a designer needs to consider the color story, design functionality, technical package and garment patterns. Some designers select an image, or series of images, to display their color story. Others use forecasting services which offer a variety of different color swatches, silhouette and textile forecasts.

The world of design is never as easy as it looks. Designing a garment entails demographic and trend research, blending the research result with the brand image and translating it all to a collection - a process that requires a great deal of toil, time and attention to detail. One of the most important aspects in the process is the Technical Design. Though many people do not know about this process, developing the technical sketch and technical package is essential to move on to production.

The technical package is similar to the drafting of the design. It shows graphic placement, points of measure, graded measurements, trim placement, seams, etc. Manufacturing a garment without a tech pack leads to difficulty when it comes to assembling of the garment. This is the last step in the development process. Garment patterns are the key ingredients to fit and styling. More returns happen because of fit issues than any other reason, especially among online sales. A well fit garment is worn more often and spends less time in the customer's closet, which increases brand awareness and follow-up sales.

Customer satisfaction and functionality are other very significant aspects that play a big role in designing a garment. The designer and product developer have to take into consideration what their customer desires in a specific garment. A garment is created by balancing function with design as well as the customer's need for style, brand value and image. Designers, fashion forecasters, merchandisers, visual merchandisers and product developers work in unison to determine the direction of the product while moving from concept through technical sketch and display to finally putting the collection on rack for sale.

Production can be either at customised level or for masses. Today, fashion industry is highly mechanised and with the help of augmented technology, fashion industry has grown manifold.

Department of Posts has tried to capture the stages in the entire process from conceptualization to the development of the finished product and is pleased to bring out a set of four Commemorative Postage Stamps portraying them.

Presenting "Indian Fashion – Concept to Consumer : Series 3......."

Credits:

Stamps/Miniature Sheet/ First Day Cover/Brochure	:	Shri Suresh Kumar
Text	:	Based on the material provided by Prof. Manika Walia.
Cancellation Cachet	:	Smt Nenu Gupta

भारतीय फैशन -
परिकल्पना से प्रयोक्ता तकः शृंखला 3

फैशन उत्पादों के संदर्भ में परिकल्पना से प्रयोक्ता तक का सफर प्रेरणा, परिकल्पना, परिश्रम और ग्लैमर के रंगों से सजा होता है। किसी परिकल्पना के अंततोगत्वा उत्पाद के रूप में ढलने की संपूर्ण प्रक्रिया का जन्म प्रायः प्रेरणा से ही होता है। फैशन जगत में प्रेरणा पाने की प्रक्रिया सतत् स्वरूप की है, जिसमें मन को विविध प्रकार की परिकल्पनाओं को स्वीकार करने के लिए स्वच्छंद छोड़ा जाता है। प्रेरणा के ये स्रोत, प्रकृति के आंगन में, वनस्पति एवं प्राणि जगत में, वन्य जीवन में, संस्कृति में और अलग–अलग क्षेत्रों के विभिन्न सामाजिक रीति–रिवाजों में बिखरे पड़े हैं।

प्रत्येक डिजाइनर, डिजाइन उत्पादन की एक विशिष्ट प्रक्रिया को अपनाता है। कोई कलेक्शन–विशेष तैयार करने से पहले डिजाइनर इसके विभिन्न पहलुओं पर विचार करता है, जैसे रंग–सज्जा, डिजाइन के व्यावहारिक प्रयोग, तकनीकी पैकेज और वस्त्रों की श्रेणी। कुछ डिजाइनर, किसी चित्र–विशेष या चित्रों के समूह का प्रयोग करते हैं और इस प्रकार अपनी रंग–सज्जा को प्रदर्शित करते हैं। जबकि, कुछेक अन्य डिजाइनर पूर्वानुमान अर्थात् फोरकास्टिंग का प्रयोग कर विभिन्न रंगों, छाया चित्रों और कपड़ों के बारे में पूर्वानुमान आधारित उत्पाद प्रस्तुत करते हैं।

डिजाइन की दुनिया उतनी सहज–सरल नहीं है, जितनी प्रतीत होती है। किसी पोशाक को डिजाइन करने की प्रक्रिया काफी लंबी होती है, जिसमें लक्षित जनसमूह तथा प्रचलन संबंधी शोध करना और फिर इस शोध के परिणाम का ब्रांड इमेज के साथ तालमेल बनाना और इन सबको समाहित करते हुए एक कलेक्शन तैयार करना शामिल होता है। इस प्रक्रिया में काफी परिश्रम और समय लगता है, जिसमें चीजों की बारीकी पर विशेष तौर पर ध्यान दिया जाता है। इस समूची प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है, तकनीकी डिजाइन। इस प्रक्रिया के बारे में लोगों को ज्यादा जानकारी नहीं होती, परंतु किसी भी पोशाक से संबंधित तकनीकी स्केच और पैकेज तैयार करना, उसके उत्पादन से पहले का महत्वपूर्ण कदम होता है।

तकनीकी स्केच तैयार करने की प्रक्रिया संपूर्ण डिजाइन की रूप–रेखा तैयार करने जैसी होती है। इसमें ग्राफिक्स का स्थान, मापन के बिंदु, ग्रेडेड माप, ट्रिम का स्थान निर्धारण और सीवन (सीम) आदि को दर्शाया जाता है। तकनीकी पैक के अभाव में किसी भी पोशाक की उत्पादन करने की प्रक्रिया में, उसे असेंबल करने के दौरान कठिनाई का सामना करना पड़ता है। तकनीकी पैक, किसी भी डिजाइन के विकास की प्रक्रिया का आखिरी कदम है। पोशाकों के पैटर्न, उनकी फिटिंग और स्टाइलिंग के महत्वपूर्ण घटक होते हैं। अधिकतर पोशाकें फिटिंग से संबंधी समस्याओं के कारण ही लौटाई जाती हैं और ऐसा ऑनलाइन बिक्री के मामले में विशेष तौर पर देखा जाता है। अच्छी फिटिंग वाली किसी भी पोशाक को व्यक्ति अधिक से अधिक पसंद करता है और स्वाभाविक तौर पर ऐसी पोशाकें उसकी अलमारी में कम से कम समय बिताती हैं। अधिक पहने जाने के कारण, संबंधित ब्रांड के बारे में लोगों की जानकारी बढ़ती है और इससे भविष्य में बिक्री में और इजाफा होता है।

ग्राहकों की संतुष्टि और व्यावहारिक इस्तेमाल, दो अन्य महत्वपूर्ण पहलू हैं, जो किसी भी पोशाक की डिजाइनिंग में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। डिजाइनर के साथ–साथ उत्पाद डेवलपर के लिए यह ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है कि ग्राहक किसी पोशाक–विशेष में क्या कुछ चाहता है। परिधानों को उनके व्यावहारिक इस्तेमाल और डिजाइन के बीच संतुलन बनाते हुए तैयार किया जाता है, जिसमें ग्राहकों की पसंद के स्टाइल, ब्रांड वेल्यू और इमेज पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। परिकल्पना के चरण से लेकर तकनीकी स्केच बनाने और डिस्पले तथा अंत में बिक्री के लिए बाजार तक पहुंचने तक के किसी भी कलेक्शन के सफर को पूरा करने की दिशा में डिजाइनर, फैशन फोरकास्टर, मर्चेंडाइजर, विजुअल मर्चेंडाइजर और उत्पाद डेवलपर साथ मिलकर काम करते हैं।

पोशाकों का उत्पादन ग्राहक–विशेष की जरूरत पर या जनसामान्य के लिए थोक उत्पादन के माध्यम से किया जा सकता है। वर्तमान दौर में फैशन जगत पूरी तरह मशीनों पर आधारित है और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी की मदद से फैशन जगत में चौतरफा वृद्धि हुई है।

डाक विभाग ने, फैशन उत्पादों को तैयार करने की प्रक्रिया के अंतर्गत, परिकल्पना से लेकर किसी परिधान को पूर्णतः तैयार करने के सफर को चरणबद्ध रूप से प्रदर्शित करने का प्रयास किया है और विभाग, इस सफर को दर्शाता हुआ 4 स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

प्रस्तुत है "भारतीय फैशन – परिकल्पना से प्रयोक्ता तक : शृंखला 3 ...."

आभार :

डाक टिकट / मिनियेचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	: श्री सुरेश कुमार
पाठ	: प्रो. मनिका वालिया द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
विरूपण मोहर	: श्रीमती नीनू गुप्ता

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 1500 पैसे (2), 1000 पैसे (2)
Denomination	: 1500p (2), 1000p (2)
मुद्रित डाक–टिकटें	: 5.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	: 5.0 Lakh each
मुद्रित मिनियेचर शीट	: 1.1 लाख
Miniature Sheets Printed	: 1.1 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00